Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 (Print)
ISSN 2278 – 6414 (Online)
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना : कर्मभूमि के संदर्भ में

• आकांक्षा कुमारी • इरा भारती • मौसम भारती
• दीपा श्रीवास्तव

Received : November 2017
Accepted : March 2018
Corresponding Author : Deepa Srivastava

Abstract: राष्ट्रीय संचेतना से अनुप्राणित साहित्य को कल्याणकारी और मानवतावादी कहा जाता है क्योंकि यह भेद-भाव से रहित एक उन्मुक्त समाज के निर्माण में सहायक होता है। प्रेमचंद हिन्दुस्तान की नई राष्ट्रीयता और जनवादी चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। अपने उपन्यासों और कहानियों में उन्होंने देश की पराधीनता के यथार्थ को उसके व्यापक आयामों और जटिलताओं के साथ प्रस्तुत किया। देश की आजादी की समस्या उनके लिए मात्र भावनात्मक अथवा राष्ट्र-प्रेम की समस्या नहीं थी वरन वह आर्थिक शोषण और दमन से जुड़ी हुई थी। ब्रिटिश शासकों की शोषण-नीति से पैदा हुई किसानों की निर्धनता, उनका दयनीय जीवन तथा अमानवीय परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन उनकी रचनाओं में मिलता है।

1932 में प्रकाशित 'कर्मभूमि' प्रेमचंद की उत्कृष्ट रचना है। इस वृहत उपन्यास में भारत के स्वाधीनता संग्राम की विस्तृत झाँकी मिलती है। सम्पूर्ण उपन्यास राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित है। राजनीतिक आंदोलन के अतिरिक्त अछूतोद्धार, जमींदार-किसान-संघर्ष, सूदखोरी, लगान-वसूली जैसे-विषयों का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। युग समाज की विकृतियों, विशृंखलताओं और रूढ़ियों के विरूद्ध जन चेतना को जागृत करना इस उपन्यास का उद्देश्य है।

प्रेमचंद की राष्ट्रीय-चेतना भारतीय समाज में हर प्रकार की समानता से जुड़ी थी। समाज में सुदृढ़ साम्य-भाव को वे राष्ट्रीयता की पहली शर्त मानते थे। आज फिर विघटनकारी शक्तियाँ बाह्य और आंतरिक अशांति उत्पन्न कर रही हैं। किसान आत्महत्या कर रहे हैं। मजदूर भूखमरी से त्रस्त हैं। इस परिप्रेक्ष्य में उनकी राष्ट्रीय-चेतना समकालीन परिस्थितियों पर जितनी खरी उतरती है, उतनी ही आज की परिस्थितियों पर भी। निस्संदेह प्रेमचंद का साहित्य देशकाल की सीमा में आबद्ध न हो कर शाश्वत है। वर्त्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनके साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना नव जागरण का संदेश देती है और आज भी प्रासंगिक है।

संकेत शब्द (Key words) : राष्ट्रीयता, स्वाधीनता-आंदोलन, सामाजिक विषमता, स्वराज, प्रासंगिक ।

आकांक्षा कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2015-2018), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

इरा भारती
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2015-2018), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

मौसम भारती
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2015-2018), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

दीपा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com